अफीम युद्ध

भूमिका
(INTRODUCTION)

यूरोप के साथ चीन का सम्बन्ध अद्यतन ऐतिहासिक प्रामाणिकता के आधार पर ईस्वी सन् के आरम्भ से ही माना जाता है। चीन से रोम को चीनी रेशम का निर्यात होता था। यूरोप के बाजारों में छठी शताब्दी तक चीनी रेशम की मांग बनी रही। चीनी रेशम के लिए चीन की निर्भरता उस समय समाप्त हुई, जब छठी शताब्दी ईस्वी के लगभग यूरोपियन्स ने चीन के रेशम के कीड़ों की चोरी कर ली। 1635 **ई. के लगभग कतिपय ईसाई धर्म प्रचारकों ने चीन में पहुंचकर ईसाई धर्म का प्रचार करना प्रारम्भ किया।** 845 ई. में इस प्रकार के प्रचार में चीनी प्रशासन द्वारा प्रतिबन्ध लगाये जाने से चीन व यूरोप का सम्पर्क प्रायः 12वीं सदी तक टूटा रहा। तेरहवीं शताब्दी में ईसाई धर्म प्रचारक पुनः चीन आने लगे। 1275 ई. में **वेनिस यात्री मार्कोपोलो** चीन आया। उसके वृत्तान्तों ने यूरोपवासियों को चीन की अविश्वसनीय जानकारी दी। 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक **वास्कोडिगामा 'केप ऑफ गुड होप'** होते हुए भारत के **'कालीकट'** बन्दरगाह पहुंचा। 1511 ई. में पुर्तगाली मलक्का पहुंचे और 1514 ई. में वे मलक्का से चीन पहुंचे। 1542 ई. पुर्तगालियों ने **निगपो** में बसने एवं व्यापार करने की अनुमति प्राप्त कर ली। 1557 ई. में पुर्तगालियों को **मकाओ द्वीप** में भी व्यापार की अनुमति प्राप्त हो गई।

पुर्तगालियों का अनुगमन स्पेनवासियों ने किया। 1557 ई. में फिलिपीन से स्पेनवासी आने लगे। 1600 ई. में डच एवं 1637 ई. में अंग्रेज व्यापारियों ने इस ओर कदम बढ़ाया। इन्होंने **कैण्टन** के बन्दरगाह पर अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न किया।

उक्त यूरोपीय जहां समुद्री मार्ग से चीन पर अपना प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न कर रहे थे, वहीं रूस ने स्थलमार्ग से चीन पर छाने का प्रयत्न किया। फलस्वरूप सीमा-युद्ध के निवारणार्थ दोनों देशों के बीच 1689 ई. में **'नेरशिन्स्क की सन्धि'** हुई। **पश्चिमी राष्ट्र के साथ चीन की यह प्रथम सन्धि थी।** 1727 ई. के पश्चात् चीन ने **सैण्टपीटर्स** में अपना दूत भेजा। **किसी भी विदेशी राज्य में यह चीन का पहला दूत था।**

इतना होने पर भी यूरोप के व्यापारियों के लिए चीन में व्यापार करना इतना सरल नहीं था। उन पर कठोर प्रतिबन्ध लगे हुए थे, परन्तु यूरोपीय व्यापारी चीन में व्यापार का परित्याग नहीं करना चाहते थे। वे चीन में **'अफीम का व्यापार'** कर यथेष्ट लाभ कमाना चाहते थे। इस अफीम के व्यापार में अंग्रेजों ने अन्य प्रतिद्वन्द्वियों को काफी पीछे छोड़ दिया। अठारहवीं सदी के अन्त तक कैंटन व्यापार अधिकांशतः आंग्ल व्यापार हो गया, जिस पर 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' का अधिकार था। **कम्पनी द्वारा अफीम के व्यापार को लेकर इंगलैण्ड व चीन के मध्य दो युद्ध हुए, जिन्हें इतिहास में प्रथम एवं द्वितीय अफीम युद्ध के नाम से जाना जाता है।**

प्रथम अफीम युद्ध (1840-42)
(FIRST OPIUM WAR)

कारण (Causes)

इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे :

(i) **क्योतो की प्रथा**—चीन में विदेशियों को व्यापार करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। विदेशी व्यापारियों को चीन में चीनी सम्राट के प्रति पूर्ण भक्ति भी प्रकट करनी होती थी। सम्राट के सामने उपस्थित होने पर उन्हें नौ बार झुककर प्रणाम करना होता था। **क्योतो** (Kohwtow : The nine Prostration) के नाम से जानी जाने वाली यह प्रथा अंग्रेज दूतों एवं ईसाई धर्म प्रचारकों के लिए सम्मानप्रद नहीं थी। वे क्योतो का पालन करने में हिचकिचाते थे। अंग्रेज व्यापारियों एवं दूतों ने इस प्रथा को इसलिए भी उचित नहीं माना, क्योंकि इससे उनके राष्ट्रीय सम्मान पर ठेस पहुंचती थी। **धर्म प्रचारकों के लिए पोप की सत्ता सर्वोपरि थी न कि चीनी सम्राट की। अतः चीनी सम्राट की सर्वोच्चता में इससे आंच आना स्वाभाविक था।**[1] स्पष्ट है कि अंग्रेज जाति इस प्रथा की समाप्ति की पक्षपाती थी, जो कि चीन में तब तक सम्भव नहीं था जब तक कि ब्रिटिश जाति का चीनी शासन में प्रभुत्व स्थापित नहीं होता।

(ii) **व्यापारिक विषमता**—चीन साम्राज्य में प्रारम्भ में विदेशी व्यापार एक तरफा था। यूरोपीय वस्तुओं की चीनी लोगों को कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी। चीन के साथ व्यापारिक सन्तुलन स्थापित करने के लिए विदेशी व्यापारियों के पास कोई ऐसी वस्तु नहीं थी, जिसे वे चीन को बेचकर व्यापारिक सन्तुलन कायम कर लें। चीन से रेशम, चाय, रबर, सोयाबीन, सिल्क एवं नानकिन का निर्यात होता था। यही कारण था कि चीन के सम्राट ने लॉर्ड मैकार्टन से व्यापार के प्रति अपने रवैये के विषय में यह कहा था कि "**हमारे स्वर्ग के समान एवं अद्‌भुत साम्राज्य में प्रत्येक वस्तु की बहुतायत है। हमें किसी भी वस्तु को आयात करने की आवश्यकता नहीं है, जिसको हम निर्यात के बदले में बर्बर देशों के व्यापारियों से स्वीकार करें।**"[2] चीनी साम्राज्य के इस दृष्टिकोण के कारण चीनियों ने यह समझना प्रारम्भ कर दिया कि वे विदेशियों से मनमाना व्यवहार कर सकते हैं। विदेशी व्यापारियों को कैंटन में व्यापार करने की अनुमति तो थी, परन्तु वे पूरे वर्ष वहां निवास नहीं कर सकते थे। **ग्रीष्म ऋतु में उन्हें मकाओ जाना पड़ता था।** अतः विदेशी व्यापारी मकाओ में अपने परिवार को रखकर कैंटन में व्यापार करने पर विवश थे। यही नहीं चीनी अधिकारी विदेशी व्यापार पर अपना नियन्त्रण स्थापित किये हुए थे। 18वीं शताब्दी के मध्य तक अंग्रेजों ने कैंटन के व्यापार पर अपना एकाधिपत्य स्थापित कर लिया। 1715 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने कैंटन में अपनी उद्योगशाला स्थापित की और कम्पनी के अधीक्षकों ने प्रायः सभी विदेशी व्यापारियों की वकालत में अहम् भूमिका निभानी प्रारम्भ कर दी। स्पष्ट रूप से अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने व्यापारिक विषमता को दूर करने का प्रयास प्रारम्भ किया।

(iii) **व्यापारिक सन्तुलन के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रयास**—चीन के व्यापार में अपना सिक्का जमाने के लिए अंग्रेजों के लिए यह नितान्त आवश्यक था कि वे चीन के व्यापारिक असन्तुलन को तोड़ें। अतः अंग्रेजों ने व्यापारियों से सम्पर्क बनाकर चीन में अफीम के सेवन के प्रचार को बल देना प्रारम्भ कर दिया। प्रारम्भ में उन्होंने तम्बाकू के साथ अफीम मिलाकर लोगों को मुफ्त में देना प्रारम्भ किया, जब चीनी अफीम के आदी होने लगे तो उन्होंने शुद्ध अफीम को बेचना प्रारम्भ किया। अफीम की मांग चीन में किस प्रकार बढ़ती गई यह अग्रलिखित तालिका से स्पष्ट है :

वर्ष	अफीम की पेटियां भेजी गईं	
1800 ई. से 1821 ई. तक	4,016	प्रत्येक पेटी में $133\frac{1}{2}$ पौंड अफीम होती थी
1821 ई. से 1828 ई. तक	9,708	
1828 ई. से 1835 ई. तक	18,712	

इस प्रकार अफीम के बढ़ते हुए व्यापार ने व्यापारिक सन्तुलन कायम कर दिया। चीनी लोग जो अफीम के आदी हो चुके थे अब विदेशी व्यापारियों की अवमानना आसानी से न कर पाये। चीनी सरकार ने इससे प्रभावित होकर 1820 ई. में कैंटन में अफीम का व्यापार बन्द करने के आदेश दिये, **परन्तु इससे चीनी अधिकारियों को जो दस्तूरी** (Squeeze) **मिलती थी, की परवाह न करते हुए लिनटीन** (Lintin) **में अफीम से लदे जहाजों को उतारने की अनुमति दी।** अधिकारियों को स्वविवेक के अधिकार प्राप्त होने से अफीम का आयात रोकना दुष्कर कार्य बन गया था। इधर चीनी व्यापारियों ने विदेशी व्यापारियों से अफीम चांदी के सिक्कों का भुगतान कर खरीदी। इससे चीन के चांदी के सिक्के विदेशों को जा रहे थे, क्योंकि चीन में राजकीय भुगतान केवल चांदी के सिक्कों से ही होता था। अतः स्वाभाविक रूप से चीनी प्रशासन को अफीम का व्यापार बन्द करने की ओर आवश्यक कदम उठाना अनिवार्य हो गया।

(iv) **आंग्ल-चीनी सम्बन्ध**—स्वतन्त्र ब्रिटिश व्यापारियों की लम्बे समय से चली आ रही इस मांग को कि चीन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर स्वतन्त्र ब्रिटिश व्यापारियों को भी व्यापार की अनुमति दी जाय, **ब्रिटिश सरकार ने मानते हुए 1834 ई. में कैंटन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया।** अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अतिरिक्त अन्य स्वतन्त्र अंग्रेज व्यापारी भी वहां व्यापार कर सकते थे। अब ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री पामर्स्टन ने लॉर्ड नैपियर को कैंटन का मुख्य अधीक्षक नियुक्त किया। ब्रिटिश सरकार कैंटन में ब्रिटिश व्यापारिक हितों की पक्षपाती थी। **इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि इंगलैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति हो चुकी थी और अब इंगलैण्ड को कच्चे माल एवं बाजार की आवश्यकता थी।**

अतः नैपियर ने कैंटन के वायसराय से व्यापारिक सम्पर्क बनाने का प्रयास किया, परन्तु चीनी अधिकारी व्यापार को राजनीतिक रूप देने के पक्षपाती नहीं थे। 1838 ई. तक कैंटन में ब्रिटिश व्यापार के विनिमय का प्रश्न दबा सा रहा, परन्तु 1838 ई. में यह प्रश्न पुनः उठा। **कैंटन के चीनी आयुक्त लिन-त्से-सू** (Lin-Tise-Hsu) **ने विदेशी व्यापारियों को अफीम की पेटियां सौंप देने के लिए बाध्य किया।** ब्रिटिश व्यापारियों को लगभग 20 हजार अफीम की पेटियां सौंपनी पड़ीं। 60 लाख डालर के मूल्य की इस अफीम को समुद्र में फेंक दिया गया। ब्रिटिश व्यापारी इस वृहद् धनराशि के नष्ट हो जाने से अत्यधिक क्षुब्ध थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर नष्ट हुई अफीम की क्षतिपूर्ति एवं चीन में विशेष व्यापारिक सुविधाएं अर्जित करने के लिए दबाव डालना प्रारम्भ कर दिया।

(v) **राज्यक्षेत्रातीत अधिकार**—कैंटन में व्यापार करने वाले सभी विदेशी व्यापारियों पर चीन की परम्परा के अनुसार चीनी कानून लागू होते थे। अंग्रेज व्यापारी इस नियम से असन्तुष्ट थे, क्योंकि इस नियम के अनुसार अंग्रेज अभियुक्त का निर्णय चीनी अदालत में होता था। अंग्रेज व्यापारी चाहते थे कि अंग्रेज व्यापारी अभियुक्त का मामला उनके अपने देश के न्यायालय में हो। एक प्रकार से वे राज्यक्षेत्रातीत अधिकार की मांग कर रहे थे।

कोस्टिन के शब्दों में, "**चीनी अधिकारियों द्वारा फौजदारी मामलों की सुनवाई के तरीकों से अंग्रेज एवं अमरीकी दोनों असन्तुष्ट थे।**"[1]

वास्तव में, न्यायिक मामले की यह अप्रसन्नता इतनी अधिक थी कि इसी को लेकर युद्ध भी प्रारम्भ हुआ था। 7 जुलाई, 1839 ई. को नाविकों के आपसी झगड़े में एक चीनी नाविक की हत्या हो गई। **चीनी आयुक्त लिन ने अंग्रेज व्यापार अधीक्षक इलियट से अभियुक्त को सौंपने की मांग की, परन्तु इलियट ने अपराधी को सौंपने से स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया।**

1. "The handling of criminal cases by the Chinese authorities applying Chinese law had the

अंग्रेज व्यापारियों को कैंटन एवं मकाओ से निष्कासित कर दिया गया। इलियट ने तुरन्त कैंटन की नाकेबन्दी कर दी तथा अप्रैल 1840 ई. में ब्रिटिश संसद में चीन के विरुद्ध युद्ध के प्रस्ताव के पास होते ही कैंटन पर अधिकार कर लिया। यांग त्सी नदी की नाकेबन्दी कर चीनी सेना पर आक्रमण किया गया। सिक्यांग पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। अतः विवश होकर चीनियों को सन्धि के लिए बाध्य होना पड़ा। **इस सन्धि को इतिहास में नानकिंग की सन्धि के नाम से जाना जाता है।**

नानकिंग की सन्धि (1842)
(TREATY OF NANKING)

नानकिंग की सन्धि के अनुबन्ध निम्नवत् थे :

(अ) हांगकांग का द्वीप अंग्रेजों को प्राप्त हो गया।

(ब) कैंटन, अमाय, फूचाओ, निंगपो एवं शंघाई नामक पांचों बन्दरगाह ब्रिटिश व्यापारियों के लिए खोल दिये गये। इन बन्दरगाहों पर ब्रिटेन अपने वाणिज्य दूत नियुक्त करेगा।

(स) ब्रिटिश व्यापारियों को चीनी व्यापारियों से सीधे क्रय-विक्रय का अधिकार दे दिया गया।

(द) आयात-निर्यात पर समान एवं नरम शुल्क पद्धति लागू होगी। शुल्क की वसूली का उत्तरदायित्व वाणिज्य दूतों का होगा।

(य) चीन ने क्षतिपूर्ति के रूप में 2 करोड़ 10 लाख डालर देना स्वीकार कर लिया।

(र) अंग्रेजों के मुकदमे उन्हीं की अदालतों में अंग्रेजी कानून के अनुसार होंगे।

परिणाम (Results)

प्रथम अफीम का युद्ध, नानकिंग की सन्धि के साथ समाप्त हुआ, परन्तु इसके अत्यन्त महत्वपूर्ण परिणाम निकले। यह सन्धि चीन के लिए अत्यन्त कड़वा विष थी तो अंग्रेजों के लिए चीन में उनकी साम्राज्यवादी फतह की पहली किरण। **इस सन्धि के निम्नलिखित महत्वपूर्ण परिणाम निकले :**

(अ) ब्रिटेन को लाभ—नानकिंग की सन्धि से ब्रिटेन को जो महत्वपूर्ण व्यापारिक लाभ हुए थे, उससे ब्रिटेन ने चीन में साम्राज्यवादी पताका का पहला झण्डा गाड़ दिया। सबसे उल्लेखनीय बात तो यह थी कि जिस अफीम व्यापार को लेकर युद्ध लड़ा गया था उसके विषय में तो नानकिंग की सन्धि में कुछ भी नहीं कहा गया। **ब्रिटेन को क्षतिपूर्ति के रूप में 2 करोड़ 10 लाख डालर की धनराशि प्राप्त हुई। उसका चीन के पांच बन्दरगाहों पर प्रभुत्व स्थापित हो गया।** हांगकांग पर ब्रिटेन का आधिपत्य स्थापित हो गया। इसके तुरन्त पश्चात् 8 अक्टूबर, 1843 ई. को इंगलैण्ड ने चीन से बोंग की सन्धि के तहत् राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों की व्यवस्था भी कर ली।

(ब) चीन में साम्राज्यवाद—नानकिंग की सन्धि से प्रभावित होकर अब फ्रांस, अमेरिका, बेल्जियम, प्रशा, हालैण्ड और पुर्तगाल, आदि भी चीन में अपने प्रभाव की वृद्धि की ओर उन्मुख हुए। एक दशक के भीतर इन राष्ट्रों ने भी उन अधिकारों को प्राप्त कर लिया जिसे इंगलैण्ड ने नानकिंग की सन्धि से प्राप्त किया था। अमेरिका ने ह्वांघीय की सन्धि, फ्रांस ने ह्वायमपोआ की सन्धि कर अपना प्रभुत्व चीन में स्थापित किया। **इस प्रकार चीन के इतिहास में असमान सन्धियों का युग प्रारम्भ हुआ।** अब चीन का स्वर्गिक साम्राज्य विदेशी जातियों का अड्डा बन गया। चीन का आर्थिक शोषण प्रारम्भ हुआ। चीन की एकान्तता का अन्त हुआ और चीन का द्वार साम्राज्यवादी शक्तियों के लिए खुल गया। **चीन एक अन्तर्राष्ट्रीय उपनिवेश बन गया।**[1]

द्वितीय अफीम युद्ध (1856)
(SECOND OPIUM WAR)

कारण (Causes)

इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे :

(i) **सीमा शुल्क सम्बन्धी मामलों पर चीन का अधिकारविहीन होना**—सन् 1842 ई. को नानकिंग की सन्धि चीन के लिए अपमानजनक विषय थी। **इस सन्धि के अनुपालन में 26 जून, 1843 ई. को चीनी सम्राट**

ने सीमा शुल्क की दरों को निश्चित कर दिया। अब चीन उन दरों में 1930 ई. तक अपनी इच्छा से कोई परिवर्तन नहीं कर सकता था। सीमा शुल्क कार्यालय के निरीक्षण हेतु ताओ-ताई नामक एक अधिकारी की नियुक्ति की गई, परन्तु कालान्तर में चीनी प्रशासन के सीमा शुल्क सम्बन्धी अधिकारियों एवं विदेशी व्यापारियों ने आपस में सांठ-गांठ से विदेशी व्यापारी सीमा शुल्क की चोरी करना शुरू कर दिया। अतः ताओ-ताई एवं इंगलैण्ड, फ्रांस व अमेरिका के मध्य 29 जून, 1854 ई. के एक समझौते को जन्म मिला। इस समझौते के अनुसार सीमा शुल्क सम्बन्धी विदेशी निरीक्षणालय की स्थापना की गई। इस निरीक्षणालय के अधिकारियों की नियुक्ति तीनों देशों (इंगलैण्ड, फ्रांस एवं अमेरिका) के वाणिज्य दूत करते थे। **इस प्रकार नये समझौते ने चीनी प्रशासन को पूर्णतः सन्धिरत राष्ट्रों पर निर्भर कर दिया।** चीनी प्रशासन पुनः अपने विहीन अधिकारों की प्राप्ति का इच्छुक था। अतः मनमुटाव होना स्वाभाविक था।

(ii) **राज्यक्षेत्रातीत अधिकार सम्बन्धी व्यवस्था का अतिक्रमण**—चीन में व्यापार करने वाली विदेशी जातियों ने राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों के सम्बन्ध में अपने-अपने देशों से जो मांग की थी उसे विदेशी देशों ने चीन के साथ विभिन्न सन्धियां कर प्राप्त कर लिया था। अब विदेशी देशों का कर्तव्य था कि वे आयुक्तों के मामलों का निर्णय करने के लिए अपने-अपने न्यायालयों की व्यवस्था करते, परन्तु विदेशी राष्ट्रों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। फलस्वरूप चीन में उद्दण्ड, बेईमान एवं उपद्रवी विदेशी नाविक एवं व्यापारी स्वच्छन्द निवास करने लगे। चीनी प्रशासन सन्धि के तहत इन्हें दण्ड भी नहीं दे सकता था। अतः ये उपद्रवी तत्व चीनी प्रशासन के लिए कष्ट का विषय बन गए।

(iii) **सन्धियों की पुनरावृत्ति का प्रश्न**—पश्चिमी देशों द्वारा अफीम के प्रथम युद्ध के पश्चात् जो सन्धियां की गई थीं उन सन्धियों से चीन का पर्याप्त पतन हो चुका था, परन्तु आने वाले वर्षों में विदेशी व्यापारियों के अधिकारों की बढ़ती मांग से प्रभावित होकर इन विदेशी राष्ट्रों ने चीन से की गई सन्धियों की पुनरावृत्ति की मांग की। चीन के लिए यह अन्यन्त कठिन था।

(iv) **अफीम के व्यापार का प्रश्न**—नानकिंग की सन्धि में अफीम के व्यापार के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा गया था। चीनी कानून के अनुसार चीन में अफीम का आयात पूर्ण रूप से प्रतिबन्धित था, परन्तु विदेशियों ने भ्रष्ट चीनी अधिकारियों से मिलकर चीन में लगातार अफीम निर्यात की। लन्दन टाइम्स के अनुसार, "1942 **के पश्चात् चीन में अफीम का व्यापार इस प्रकार अबाध रूप से हो रहा था जैसे गुड फ्राइडे के दिन लन्दन की सड़कों पर डबलरोटी का व्यापार।**" लन्दन टाइम्स के इस कथन की सार्थकता इस बात से भी सिद्ध हो जाती है कि 1840 से 1859 तक चीन में अफीम के वार्षिक आयात में 300 प्रतिशत की वृद्धि हुई। चीन में अफीम का व्यापार जिस गति से बढ़ रहा था, उस गति से वहां की चांदी देश से बाहर जा रही थी। चीन का राजकीय खर्च चांदी के सिक्कों पर निर्भर था। अतः चीनी प्रशासन के लिए अफीम का व्यापार सिरदर्द बन गया था।

(v) **तात्कालिक कारण**—युद्ध का तात्कालिक कारण 8 अक्टूबर, 1856 ई. को चीनी अधिकारियों द्वारा लोर्चा ऐरो नामक समुद्री जहाज पर छापा मारकर उसमें स्थित 12 सदस्यों को समुद्री लूट के अभियोग में गिरफ्तार करना था। ब्रिटिश दूत ने सदस्यों की रिहाई की मांग की, 22 अक्टूबर, 1850 ई. को चीन ने बन्दियों को रिहा कर दिया, परन्तु बन्दियों के साथ कोई उच्च चीनी पदाधिकारी नहीं आया था। **चीन ने इस कार्य हेतु क्षमा प्रार्थना भी नहीं की, अतः केवल इस बात को लेकर कि बन्दियों को छोड़ने कोई उच्च अधिकारी नहीं आया और न ही चीन ने क्षमा प्रार्थना की है, ब्रिटिश सेना ने कैंटन पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया।** इसी प्रकार फ्रांस ने भी एक फ्रांसीसी धर्म प्रचारक की चीन में हत्या के मुकाबले को लेकर चीन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। इस प्रकार द्वितीय अफीम युद्ध में फ्रांस व इंगलैण्ड ने मिलकर चीन के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही की। फ्रांसीसी सेनाएं बमबारी करती हुई तिन्तसीन नामक स्थान पर जा पहुंचीं। अन्त में विवश होकर विजयी राष्ट्रों एवं चीन के मध्य **'तिन्तसीन की सन्धि'** हुई।